डॉ. सुशील अग्रवाल

मैत्री या सेव्य-सेवक भाव का निर्धारण

जीवन में हम विभिन्न लोगों के संपर्क में आते हैं और उनके साथ कोई न कोई संबंध भी बनाते जाते हैं। इनमें से कुछ संबंध ऐसे होते हैं, जिनमें परस्पर लाभ–हानि या सेवा जुड़ी होती है। जैसे– नौकरी में मालिक एवं कर्मचारी के मध्य (लाभ–हानि), व्यवसाय में निर्माता एवं वितरक के मध्य (लाभ–हानि), पति–पत्नी (परस्पर सेवा भाव) आदि। भूखण्ड के सन्दर्भ में राशि निषेध, आयादि आदि का विचार वास्तु के अंतर्गत किया जाता है और विवाह के लिए भी अष्टकूट मिलान से दो व्यक्तियों की प्रवृति आदि समझने में आसानी होती है, परन्तु दो व्यक्तियों को एक–दूसरे लाभ–हानि होगी, इसके सन्दर्भ में सामान्यतया कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती है। ज्योतिषी के समक्ष भी इस प्रकार के प्रश्न आते रहते हैं, जिनका समाधान करने के उद्देश्य से यह लेख लिखा जा रहा है।

अग्नि पुराण में इस विषय उल्लेख करते हुए भगवान शंकर जी कहते हैं–अब मैं 'सेवाचक्र' का प्रतिपादन कर रहा हूँ, जिससे सेवक को सेव्य से लाभ– हानि का ज्ञान होता है। पिता–माता–भाई, स्त्री–पुरुष, मित्र, नौकर, बन्धु आदि के लिए भी इसका विचार विशेष रूप से करना चाहिए। अर्थात हम किससे मित्रता का व्यवहार करें या किससे रिश्ता रखें, किस कर्मचारी को रखें या किस संस्था में कार्य करें, जिससे मुझे सुख, लाभ और प्रसन्नता प्राप्त हो। यह विषय नरपति जयचर्या में भी संक्षेप में उल्लिखित है। सेवा चक्र की विभिन्न विधियाँ हैं, उनमें से कुछ मुख्य हैं।

प्रथम विधि–

- 5X7(35 cells)की तालिका बनाकर सर्वप्रथम 5 स्वरों को लिखें
- क से ह तक वर्णों को लिखें। वर्णों को लिखते समय कवर्ग, चवर्ग एवं टवर्ग के पंचम वर्ण (ङ ञ् ण) को न लिखें
- अंतिम पंक्ति में क्रमसे सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, शत्रु तथा मृत्यु लिखें।

अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह
सिद्ध	साध्य	सुसिद्ध	शत्रु	मृत्यु
1	2	3	४	५

इनमें पहला कॉलम शुभ है, दूसरा पोषक, तीसरा धनदायक, चौथा आत्मनाशक और पांचवा मृत्युदायक है।

आकलन विधि :

- यदि सेव्य तथा सेवक दोनों के प्रचलित नाम के प्रथम अक्षर पांचों में से किसी एक ही कॉलम (सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, शत्रु या मृत्यु) में पड़े, तो यह सर्वथा शुभ माना गया है। अर्थात दोनों को परस्पर लाभ होगा।
- यदि सेव्य तथा सेवक दोनों के प्रचलित नाम के प्रथम अक्षर सिद्ध, साध्ययासुसिद्धमें पड़े, तो शुभ माना गया है।
- यदि प्रश्नकर्ता का नाम–अक्षर सिद्ध, साध्य यासुसिद्धमें हो और जिसके बारे में पूछा जा रहा है, उसका नाम–अक्षर शत्रु या मृत्युकॉलम में हो, तो यह त्याग योग्य है।
- यदि प्रश्नकर्ता का नाम–अक्षर शत्रु या मृत्युकॉलम में होऔर जिसके बारे में पूछा जा रहा है, उसका नाम–अक्षरसिद्ध, साध्य यासुसिद्ध में हो, तो भी अशुभही है।

द्वितीय विधि–

- 6X8 (48 cells) की तालिका बनाकर सर्वप्रथम 5 स्वरों को लिखें

- क से ह तक वर्गों को लिखें
- अंतिम कॉलम में क्रमसे सभी वर्गों के स्वामी को लिखे।

अ	इ	उ	ए	ओ	देवता
क	ख	ग	घ	ङ	दैत्य
च	छ	ज	झ	ञ	नाग
ट	ठ	ड	ढ	ण	गन्धर्व
त	थ	द	ध	न	ऋषि
प	फ	ब	भ	म	राक्षस
य	र	ल	व	–	पिशाच
श	ष	स	ह	–	मनुष्य

इनमें देवता से बलि दैत्य, दैत्य से बली नाग, नाग से बली गन्धर्व, गन्धर्व से बलि ऋषि, ऋषि से बली राक्षस, राक्षस से बली पिशाच और पिशाच से बलि मनुष्य माना गया है।

आकलन विधि – बली वर्ग वाले को अपने से दुर्बल का त्याग करना चाहिए।अर्थात अपने से बली वर्ग को ग्रहण करना चाहिए।एक ही वर्ग के सेव्य तथा सेवक के नाम का आदि–वर्ण रहना भी उत्तम होता है।

तृतीय विधि–

- अपने नाम के प्रथम अक्षर का नक्षत्र और दूसरे के नाम के प्रथम अक्षर का नक्षत्र ज्ञात करें (पंचांग के घात चक्र से) ज्ञात करें।
- जन्म से अतिमैत्र की 9 ताराओं की 3 आवृति करके निम्न सारणी बनायें और अंतिम कॉलम में निम्न प्रकार से शुभ–अशुभ फल लिखे लें

आकलन विधि – अपने नक्षत्र को संख्या 1 मानें और फिर दूसरे के नक्षत्र की संख्या तक गिने। इस प्रकार जो संख्या आए, उसके अंतिम

1	जन्म	10	जन्म	19	जन्म	अशुभ
2	सम्पत	11	सम्पत	20	सम्पत	उत्तम
3	विपत	12	विपत	21	विपत	निष्फल
4	क्षेम	13	क्षेम	22	क्षेम	शुभ
5	प्रत्यरि	14	प्रत्यरि	23	प्रत्यरि	धन हानि
6	साधक	15	साधक	24	साधक	राज्य लाभ
7	वध	16	वध	25	वध	विनाश
8	मैत्र	17	मैत्र	26	मैत्र	मैत्रीकारक
9	अतिमैत्र	18	अतिमैत्र	27	अतिमैत्र	हितकारक

कॉलम में लिखित फल यदि शुभ है, तो उस व्यक्ति के साथ कार्य करना चाहिए, अन्यथा नहीं।

चतुर्थ विधि–

परस्पर नाम राशि के आधार पर भी निर्णय किया जा सकता है कि कौन सी नाम राशि के व्यक्ति लाभ–सुख प्रद रहेंगे या नहीं।

- मेष – मिथुन, वृष – कर्क, मिथुन – धनु, कर्क – मकर, कर्क – कुम्भ, कन्या – वृश्चिक, कन्या – मीन, मकर – वृश्चिक, मकर – कुम्भ, मीन–वृष औरमीन–मकर राशियों वाले परस्पर प्रीतिकर एवं मैत्रीप्रद होते हैं।
- महामैत्रीः मिथुन–सिंह, मिथुन–कुम्भ, तुला–मेष और तुला–सिंह राशियों वालों के मध्य महा मैत्री होती है।
- धनु–कुम्भ के मध्य मैत्री नहीं होती।
- वृष–वृश्चिक के मध्य परस्पर वैर होता है।
- शेष सम होते हैं।

सभी विधियों से आकलन करने के बाद जिसकी अधिक विधियों से पुष्टि होती हो, उस फल के अनुसार मैत्री, सेवा या लाभ आदि की अपेक्षा करनी चाहिए। ❐

मो. 9810162371